ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में दलितों की भूमिका

Role of Dalits in the First Freedom Struggle of 1857

Paper Submission: 15/01/2020, Date of Acceptance: 26/01/2020, Date of Publication: 27/01/2021

आई. आर सोनवानी
प्राचार्य,
इतिहास विभाग,
शासकीय शिवनाथ विज्ञान महाविद्यालय, राजनांदगांव, छ.ग, भारत

फुलसो राजेश पटेल
सहायक प्राचार्य,
इतिहास विभाग,
शासकीय शिवनाथ विज्ञान महाविद्यालय, राजनांदगांव, छ.ग, भारत

सारांश

सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम, भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण स्वतंत्रता संग्राम के रूप में प्रसिद्ध है। कई इतिहासकारों ने इसे महान विद्रोह, किसानों का विद्रोह, सिपाहियों के द्वारा असंतुष्ट होकर किया गया सिपाही आन्दोलन तथा राजा–महाराजा या प्रादेशिक राजाओं के द्वारा किया गया विद्रोह माना है। भारतीय इतिहासकारों ने सर्वमान्य से इस बात को स्वीकार किया है कि, पहली बार भारत के समस्त वर्ग जिसमें राजा–महाराजा, साधारण किसान, हिन्दू–मुस्लिम तथा भारत में रहने वाले जनसामान्य वर्ग भी ब्रिट्रिश सत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए पहली बार कंधे से कंधा मिलाकर इस आन्दोलन में भाग लिया था। यद्यपि तथाकथित कारणों से यह महासंग्राम सफल नहीं हो सका तथापि भारतीय इतिहासकारों के द्वारा इसे जन आन्दोलन के नाम से परिभाषित किया है। इस आन्दोलन में भारत में रहने वाले दलित वर्गों ने भी उल्लेखनीय योगदान दिया है, उनके योगदान को विस्मृत नहीं किया जा सकता है।

The freedom struggle of 1857, India's first freedom struggle is famous as a very important freedom struggle from historical, political, economic and cultural point of view. It has been considered by many historians to be a great revolt, peasant revolt, the Sepoy movement made by the soldiers disgruntled and the revolt by the king-maharaja or territorial kings. Indian historians have universally accepted that, for the first time, all sections of India, including the King-Maharaja, ordinary peasants, Hindu-Muslims and the masses of people living in India, also stood shoulder to shoulder for the first time to overthrow the British power. Took part in this movement together. Although this Mahasangram could not succeed due to so-called reasons, however, it has been defined by Indian historians as the people's movement. The Dalit classes living in India have also contributed significantly in this movement, their contribution cannot be forgotten.

मुख्य शब्द : स्वतंत्रता संग्राम, हिन्दू–मुस्लिम, साधारण किसान, इतिहासकारों।
Freedom Struggle, Hindu-Muslim, Ordinary Farmers, Historians.

प्रस्तावना

1857 का महासंग्राम प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के नाम से अभिभूत है क्योंकि इसमें भारतीय समाज के प्रत्येक तबके के लोग समर्पित होकर भाग लिये थे। आलोच्यकाल में 1857 के क्रांति में दलितों की भूमिका को रेखांकित कर प्रकाश में लाना लाजमी प्रतीत होता है इससे दलितों को राष्ट्रीय धारा में जोड़ने में मार्ग प्रशस्त होगा ।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य स्वाधीनता आन्दोलन में दलितों के द्वारा सक्रिय रूप से स्वाधीनता आन्दोलन में भूमिका का निर्वहन किया है। जिसे इतिहास के अध्येयताओं को जानना जरूरी हैं। इस आन्दोलन में भारत के सभी वर्ग के लोगों के द्वारा जाति–पाति, धर्म, संप्रदाय, वर्ग आदि के भेदभाव को भुलाकर कंधे से कंधा मिलाकर दलितों ने भी इस स्वतंत्रता संग्राम में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया था। इनके योगदान को इतिहास के पृष्ठों पर अंकित करना या राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के मुख्य धारा में जोड़ने के उद्देश्य से प्रेरित होकर यह शोध पत्र उल्लेखित है।

1857 के महान विद्रोह को भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम की स्वीकृति मिल चुकी है। इसमें एक मान्य तथ्य यह बन चुका है कि इस विद्रोह का नेतृत्व बेसक ब्रिटिश फौज के भारतीय सिपाहियों ने किया था किन्तु यह

विद्रोह बंगाल आर्मी तक सीमित नहीं था। भूस्वामी, कुलीनों के अलावा जनसामान्य ने भी इस महान विद्रोह में मदद की थी और देश के विभिन्न हिस्सों में इस महान राष्ट्रीय घटना से जुड़ी कार्यवाहियों में शिरकत की थी। इस तथ्य से सभी सहमत है कि 1857 की महान क्रांति की शुरूआत चर्बी वाले कारतूस की घटना से शुरू हुई थी प्रोफेसर अरूण बंघोपाध्याय ने अपनी पुस्तक हिस्ट्री आफ गन एण्ड शैल फैक्ट्री, सासीपुर में लिखा है कि वैसे तो सैन्य औजारों का उत्पादन देश के विभिन्न हिस्सों में, कम्पनी के प्रयोग शालाओं में होता था लेकिन बंगाल में एक आयुध फैक्ट्री के निर्माण की पहली सुव्यवस्थित कोशिश उन्नीसवीं सदी के मध्य में शुरू हुई। चूँकि दमदम लम्बे अर्से से बंगाल आर्टिलरी का केन्द्र बना हुआ था अतएव उसे ही कारतूसों की टोपियों के उत्पादन तथा उसकी मरम्मत स्थल के रूप में चुना गया था और 1846 में ब्रिटिश भारतीय सेना की भयंकर हार से निकला था। इस फैक्ट्री को इसी प्रयोजन से स्थापित की गई थी। यह महत्वपूर्ण निर्णय बहुत हद तक 1841–42 के अफगान अभियान में ब्रिट्रिश भारतीय सेना की भयंकर हार का प्रतिफल था। इस फैक्ट्री में छोटे हथियारों के लिए कारतूस बनाने वाला एक हिस्सा भी था और गाय और सूअर की चर्बी लगे कारतूसों को लेकर समस्या यहीं से शुरू हुई थी । (1) एच.आई.एस.कंवर ने अपनी पुस्तक ''मैमोअर्स आफ दमदम'' में चिकनाई लगे कारतूसों के मसले पर रोशनी डाली है। वे लिखते हैं कि अट्ठारह सौ संत्तावन की जनवरी के मध्य में दमदम में गोली बारूद फैक्ट्री के निकट एम ऐसी घटना हुई जिसके बहुत ही दूरगामी नतीजे निकले। इस संबंध में कंवर लिखते हैं कि एक नीची जाति के लश्कर या मैग्जीन में काम करने वाले की जब कैन्टूनमन्टें में एक ऊँची जाति के सिपाही से भेट हुई, उसने अपने लोटे से पानी पीने के लिए कहा। ब्राम्हण सिपाही ने जाति की याद दिलाते हुए नाराजगी से उसे जवाब दिया। इस पर उस लश्कर ने व्यंग्य से उससे कहा कि जल्द ही ऊँची जाति और नीची जाति सब एक हो जाने वाले हैं क्योंकि सिपाहियों के लिए ही डिपुओं में गाय की चर्बी और सुअर की चर्बी में लिपटे कारतूस बनाये जा रहे हैं और जल्द ही पूरी सेना में उनका इस्तेमाल आम फहम हो जायेगा। (2) कंवर आगे लिखते हैं कि वास्तव में वह दूषण सिपाहियों के होंठों तक आ जाने वाला था। यह कोई कल्पना नहीं थी कुछ समय पश्चात् दिखाई देने वाला यह तथ्य सच्चाई था।

इसलिए इसका असर हिन्दुओं तथा मुसलमानों दोनों के मन में घृणा की तीव्र भावनाएं उभरकर सामने आने के रूप में हुआ। (3) ऐसा समझा जाता है कि जिस ब्राम्हण सिपाही की निचली जाति के लश्कर ने ताना मारा था वह और कोई नहीं मंगल पांडे था। कारतूसों में गाय और सूअर की चर्बी मिली होने की बात को सुनकर मंगल पांडे उबल पड़ा था 29 मार्च को दमदम फैक्ट्री के नजदीक, बैरकपुर में परेड मैदान पर उसने अचानक ब्रिटिश सार्जेन्ट मेजर पर गोली चलाकर उसे धायल कर दिया। इसी तरह एक एडजुटेंट पर गोली चलाकर उसे घायल कर दिया। बहरहाल मंगलपांडे पर हवलदार शेख पल्टू ने हमला कर दिया और उसने मंगलपांडे के हाथों मारे जाने से एडजुटेंट तथा सार्जेंट मेंजर को बचा लिया। बाद में मंगल पांडे और ईश्वरी पांडे को फांसी पर चढ़ा दिया । (4) शेख पल्टू को मेजर हैरसे ने पदोन्नत कर जमादार बना दिया, कटाक्ष करने वाले लश्कर की पहचान मातादीन भंगी के रूप में की गयी है।

इलाहाबाद के जी.बी. पंत इंस्टीट्यूट आफ सोसल सांइस के बद्रीनारायण तिवारी ने यह रेखांकित किया है कि 1857 का विद्रोह इस अर्थ में अनोखा था कि इसमें समाज के विभिन्न तबके के लोग एक साझा लक्ष्य के लिए काम कर रहे थे लेकिन इस क्रम में किसी खास ग्रुप के वृहत्तर समग्रता में विलीन नहीं होना पड़ा था, जबकि गांधी वादी युग में ऐसा हुआ था। (5) मातादीन भंगी के भूमिका की चर्चा करते हुए वह लिखते हैं ''एक बहुत ही संकीर्ण परिप्रेक्ष्य देखकर ही यह जाना जा सकता है कि निचली जातियों का 1857 के विद्रोह से कुछ लेना देना नहीं था। परन्तु इन दबे कुचले लोगों के हथियारों तक पंहुच न होने के चलते सशत्र संघर्ष में भले ही हिस्सा न लिया हो, फिर भी उन्होंने आन्दोलन में बहुत ही महत्वपूर्ण ऊर्जा भरी थी जिसके बिना यह संघर्ष वह रूपाकार ले ही नहीं सकता था, जो उसने ग्रहण किया''। (6) मातादीन भंगी के कटाक्ष के संबंध में तिवारी लिखते हैं– बहरहाल अचरज की बात है कि ज्यादातर लोग एक निचली जाति के व्यक्ति के शरारती कटाक्ष का महत्व समझ पाने में विफल ही रहे है परन्तु नीची जाति के मातादीन भंगी के शब्दों ने वास्तव में स्वाभिमान जगाने का काम किया था और सवर्ण मंगल पांडे तथा उनके जैसे लोगों के सदियों से सोये पड़े आत्म गौरव को जगाने के लिए उत्प्रेरक का काम किया था। इसी तरह ''बलीराम महेतर तथा चेतराम जाटव के नाम राष्ट्रीय पुनरोदय की शानदार मिसालों के तौर पर सामने आते है। निचली जाति में जन्में इन दोनों लोगों को, जो बैरकपुर के विद्रोहों से शुरू हुए बगावतों के सिलसिले में कूदपड़े थे।

ब्रिट्रिश अफसरों के आदेश पर उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में एक पेड़ में बांधकर उन्हें गोली मार दी गयी थी''। (7) उस युग में निचली जाति के अनेक नायक – नायिका के नाम सामने आये हैं जिसमें मातादीन के अलावा बलीराम महेतर, चेतराम जाटव, झलकारी बाई, उदा देवी, वीरापासी, बंसके चमार तथा दूसरे अनेक लोग शामिल है। (8)

इतिहासकार एम.एस. जयप्रकाश मंगल पॉडे को 1857 के सिपाही विद्रोह का पहला योद्धा मानने से इंकार करते है। इनका कहना है कि इस प्रकरण में पहला अभियुक्त मातादीन भंगी को बनाया गया था, जिसे ब्रिटिश अदालत ने सजा दी थी और फांसी पर चढ़ा दिया था। (9) मंगलपांडे को इस प्रकरण में दूसरा अभियुक्त बनाया गया था। सन 1997 में पटना में 28–29 सितंबर को अवर्ण साहित्य सम्मेलन में इस विषय पर अनेक लेख – सामने आये इनमें से एक लेख में रेखांकित किया गया था कि सिपाहियों के जरिए स्वतंत्रता के युद्ध का बीज बोने वाला शख्स, मातादीन भंगी था। उसने कारतूसों में पशु वसा की चिकनाई के उपयोग को बेपर्दा किया था। (10) बंगाल आर्मी की 70 वीं. रेजीमेन्ट के कर्नल राईट ने भी 1857 के जनवरी में लिखे पत्र में इसका जिक्र किया है''।

उत्तर प्रदेश (मैनपुर) से प्रकाशित अखबार– अनार्य भारत 15 अगस्त 1996 के अंक में लिखा है कि इसके बाद सभी हिन्दू सिपाहियों ने विद्रोह की योजना बनाई। यह उल्लेखनीय है कि सरकार द्वारा तैयार की गई चार्ज शीट में अन्य अभियुक्तों के साथ मातादीन का नाम अभियुक्त संख्या एक के रूप में आया है। मातादीन को सबसे पहले फांसी पर चढ़ाया गया था (11) दलित साहित्यकार जी.सी. दिनकर, आचार्य भगवान दास भी इस तथ्य को स्वीकारते है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महागाथा में दलितों की उल्लेखनीय भूमिका रही है। दलितों के योगदान को उपयुक्त स्थान मिलना चाहिए। सन् 1857 ई. का युग यह दिखाता है कि, समाज अर्न्तविरोधों से उबरते हुए एक साझा लक्ष्य के लिए एकजुट होने में समर्थ था । वास्तव में आज के दौर में उस जमाने से सीख ले सकते हैं और सभी सामाजिक तबकों को इसका शिक्षा देकर कि उनके पुरखों ने एकजुट होकर साझा शत्रु के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। इससे प्रेरणा लेकर सुदृढ़ राष्ट्र एवं समाज की विकासशील आयाम गढ़ी जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गुप्ता मुरारी लाल –हिस्ट्री आफ ब्रिटिश रूल इन इंडिया पृ – 260*
2. *श्रीवास्तव रामसेवक (अनुवादक) 1857 स्वतंत्रता संग्राम पृ – 33*
3. *लोक लहर– 9 दिसंबर – 2007 में प्रकाशित लेख*
4. *पूर्ववत*
5. *मार्क्स और एगेंल्स भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857– पृ – 11*
6. *सी.पी.आई. प्रकाशन प्रभाकर विजय (अनुवाद) 1857 का संग्राम पृ – 13*
7. *लोक लहर 9 सितंबर 2007 में प्रकाशित लेख*
8. *पूर्ववत्*
9. *पूर्ववत्*
10. *तिवारी बी.एन. इकानामिक एण्ड पोलिटिकल वीकली 31 अगस्त 2004 प्रकाशित लेख*
11. *जयप्रकाश एम.एस. द हिन्दू 26 अगस्त 2005 प्रकाशित आलेख*
12. *अवर्ण साहित्य सम्मेलन– 28–29 दिसम्बर 1997 रिपोर्ट*
13. *अनार्य भारत– 15 अगस्त 1996 बी.एन. तिवारी का प्रकाशित लेख,तथा दिनकर डी.सी. स्वतंत्रता संग्राम में अछूतों का योगदान* – पृ – 37